Achchhi Guftagu Kijiye (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 427
Weekly Booklet : 427

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब गुफ़्तगू के आदाब से एक क़िस्त

बनाम

अच्छी गुफ़्तगू कीजिये

(सफ़हात : 19)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**अच्छी गुफ़्तगू कीजिये**"

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : Tarajimindia@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अच्छी गुफ़्तगू कीजिये (क़िस्त : 1)

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला "अच्छी गुफ़्तगू कीजिये (क़िस्त : 1)" पढ़ या सुन ले उसे सुन्नत के मुत़ाबिक़ बातचीत करना आ जाए और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे ।"

(ترمذی، 2/27، حدیث:484)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बेशक आदमी को बातचीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है मगर येह याद रहे कि ग़ैर ज़रूरी जाइज़ गुफ़्तगू से भी **ख़ामोशी** बेहतर है ।

बातचीत में आवाज़ बुलन्द करने की मज़म्मत

अल्लाह पाक पारह 21 **सूरए लुक़्मान** आयत 19 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ط اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿۱۹﴾ ع

आसान तरजमए 'कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपनी आवाज़ कुछ पस्त रख, बेशक सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है ।

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "गुफ़्तगू के आदाब" सफ़्ह़ा 13 ता 27 से लिया गया है ।

नर्म आवाज़ से बात करना सुन्नत है

हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस मुबारक आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह व ना पसन्दीदा है और इस में कुछ फ़ज़ीलत नहीं है, गधे की आवाज़ बा वुजूद बुलन्द होने के मक्रूह (या'नी ना पसन्दीदा) और वह्शत अंगेज़ (या'नी नफ़रत दिलाने वाली) है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नर्म आवाज़ से कलाम (या'नी बातचीत) करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को ना पसन्द रखते थे।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा 21, लुक्मान, तह़तल आयह : 19, स. 762)

मुश्रिकीने अ़रब ऊंचा बोलने को फ़ख़्र समझते थे

हज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : जब लोग आपस में गुफ़्तगू करें तो उन में सब से ज़ियादा बुरी और वह्शतनाक (या'नी नफ़रत दिलाने वाली) आवाज़ उस की है जो गधे की त़रह़ ऊंची आवाज़ से बोलता है। मुश्रिकीने अ़रब ऊंचा बोलने को फ़ख़्र समझते थे, इस आयत में उन के इस फ़ख़्रिय्या त़रीक़े का रद फ़रमाया गया।

(تفسیر روح البیان، پ21، لقمٰن، تحت الآیۃ:19، 7/87 ملخصًا)

गधा क्यूं बोलता है ? :

गधे की आवाज़ का तज़्किरा हो रहा है तो इस बारे में एक मा'लूमाती रिवायत पेश की जाती है। चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जब तुम **मुर्ग़** की अज़ान सुनो तो **अल्लाह** पाक से फ़ज़्ल की दुआ़ करो क्यूं कि वोह फ़िरिश्ते को देखता है। और जब तुम **गधे** का रेंकना (या'नी बोलना) सुनो तो शैत़ान से **अल्लाह** पाक की पनाह मांगो क्यूं कि वोह

शैतान को देखता है।" (بخاری،2/405،حدیث:3303) मसलन यूं कहिये : اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم । (تیسیر شرح جامع صغیر،1/107)

ज़ोर से छींकना भी मक्रूह है

हज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ऊपर बयान की हुई आयते मुबारका के तअ़ल्लुक़ से मज़ीद लिखते हैं : इस से छींक का मस्अला भी वाज़ेह़ (या'नी ज़ाहिर) हो गया कि ज़ोर से छींकना मक्रूह (या'नी ना पसन्दीदा) है, इसी लिये हुक्म है कि जितना मुम्किन हो आहिस्ता आवाज़ से छींकने की कोशिश करे। (تفسیر روح البیان،پ21، لقمٰن، تحت الآیۃ:19، 7/88 ملخصاً)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "ज़ोर से छींकना शैतान की तरफ़ से है।" (عمل الیوم واللیلۃ،ص119،حدیث:265) सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। (شعب الایمان،7/32،حدیث:9356) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के बारे में फ़रमाते हैं : मत़लब येह है कि मस्जिद में ज़ोर से छींकना ज़ियादा मक्रूह (या'नी सख़्त ना पसन्दीदा) है और मस्जिद के इ़लावा कम।

(فیض القدیر،5/311،تحت الحدیث:7156)

मिलने वाले की त़रफ़ चेहरा रखिये

पारह 21 सूरए लुक़्मान आयत 18 में इर्शादे इलाही है : ﴿وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ﴾ **आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** "और लोगों से बात करते वक़्त अपना रुख़्सार टेढ़ा न कर।" ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस मुबारक आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : जब आदमी बात करें तो उन्हें (या'नी जिस से बात कर रहे हैं उन को) ह़क़ीर जान कर उन की त़रफ़ से रुख़ फेरना, जैसा कि मुतकब्बिरीन

(या'नी मग़रूरों) का त़रीक़ा है, इख़्तियार न करना, ग़नी व फ़क़ीर (या'नी अमीर व ग़रीब) सब के साथ ब तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी से) पेश आना।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा 21, लुक़्मान, तह़तल आयह : 18, स. 761)

ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तफ़्सीरे रूहुल बयान में लिखते हैं कि सलाम व कलाम और मुलाक़ात के वक़्त बत़ौरे तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी के त़ौर पर) अपना पूरा चेहरा लोगों के सामने लाइये, उन से चेहरा न हटाइये और न इस का कुछ ह़िस्सा छुपाइये, मुतकब्बिरीन की आ़दत होती है कि लोगों को ऐसे ही ह़क़ारत की निगाह से देखते हैं और फ़ुक़रा व मसाकीन को ग़ुस्से से देखते हैं, बल्कि तुम्हारे हां अमीर व ग़रीब दोनों अच्छे सुलूक के मुआ़मले में बराबर हों।

(تفسیر روح البیان، پ21، لقمٰن، تحت الآیۃ:18، 7/84)

गुफ़्तगू समझ में आए ऐसा अन्दाज़ होना चाहिये

बाज़ारी अन्दाज़ में चिल्ला चिल्ला कर बातें करने से बचना चाहिये कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी भी इस त़रह़ बातें नहीं करते थे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू शरीफ़ में आवाज़ न ज़ियादा बुलन्द होती, न इतनी धीमी कि सामने वाले को सुनने में दुश्वारी पेश आए।

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गुफ़्तगू आसान होती

उम्मुल मुअमिनीन (या'नी तमाम मुसल्मानों की मां) ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ गुफ़्तगू फ़रमाते, हर सुनने वाला उसे समझ लेता था।

(ابو داوٗد، 4/343، حدیث:4839)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बात तीन बार दोहराते

ख़ादिमुन्नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब कोई बात फ़रमाते तो उस को तीन मरतबा दोहराते ताकि उसे समझ लिया जाए। (بخاری،1/52،حدیث:95)

शर्ह़े ह़दीस : "मिरआत शरीफ़" में है : या'नी मसाइल बयान करते वक़्त एक एक मस्अला तीन तीन बार फ़रमाते ताकि लोगों के ज़ेह्न में उतर जाए, (यहां) हर कलाम (तीन बार दोहराना) मुराद नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/194)

गुफ़्तगूए मुस्त़फ़ा

सिरात़ुल जिनान जिल्द 7 सफ़्हा 502 पर है : सीरत की किताबों में मज़्कूर (या'नी बयान किया गया) है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत तेज़ी के साथ जल्दी जल्दी गुफ़्तगू नहीं फ़रमाते थे बल्कि ठहर ठहर कर कलाम (या'नी बातचीत) फ़रमाते थे और आप का कलाम इतना साफ़ और वाज़ेह़ होता था कि सुनने वाले उस को समझ कर याद कर लेते थे और अगर कोई अहम बात होती तो उस जुम्ले को कभी कभी तीन तीन मरतबा फ़रमा देते ताकि सुनने वाले उस को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर लें। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बिला ज़रूरत गुफ़्तगू नहीं फ़रमाते थे बल्कि अक्सर **ख़ामोश** ही रहते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को "जामेअ़ कलिमात" का मो'जिज़ा अ़त़ा किया गया था कि मुख़्तसर से जुम्ले में लम्बी चौड़ी बात को बयान फ़रमा दिया करते थे।

मुश्किल ज़बान बोलने वाला वज़ीर (चुटकुला)

बोलने में अल्फ़ाज़ सादा और साफ़ साफ़ होने चाहिएं, मुश्किल अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने में हो सकता है कि अगले पर आप की

“ज़बानदानी” की धाक तो बैठ जाए मगर आप कहना क्या चाह रहे हैं वोह उस की समझ में न आए। मेरी इस बात को इस “फ़र्ज़ी चुटकुले” से समझने की कोशिश कीजिये : एक बार वज़ीरे ज़राअ़तो आबपाशी (या'नी Minister for irrigation) एक गांव के दौरे (या'नी Visit) पर थे, किसानों का एक वफ़्द (या'नी Delegation) मिलने आया, उन लोगों ने वज़ीर से इजाज़त लेने के लिये एक किसान को अन्दर भेजा, वज़ीर साहिब ने सर उठा कर देखा और पूछा : “तुम्हारी किश्ते ज़ार पर इम्साल तक़ातुरे अम्त़ार हुवा या नहीं ?” अनपढ़ किसान (FARMER) ने जब येह जुम्ला सुना तो फ़ौरन बाहर निकल आया और साथियों से कहने लगा : “वज़ीर साहिब तिलावत फ़रमा रहे हैं।”

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! वज़ीर साहिब अगर मुश्किल ज़बान न बोलते तो किसान परेशान न होता, ह़ालां कि वोह तिलावत नहीं थी, बात ज़रा बना सजा कर पेश की गई थी, वज़ीर के जुम्ले का मा'ना है : “तुम्हारे खेत पर इस साल बारिश हुई या नहीं ?” लिहाज़ा जब भी किसी से बातचीत करें या तक़रीर व बयान फ़रमाएं या मज़्मून व किताब वग़ैरा लिखने की तरकीब करें तो सुनने पढ़ने वालों की समझ में आ सकें ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने की कोशिश फ़रमाएं।

सब से ज़ियादा जहन्नम में ले जाने वाली दो चीज़ें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़बान को क़ाबू में रखना बहुत ज़रूरी है, बे शुमार लोग ऐसे भी होंगे जो सिर्फ़ ज़बान की वज्ह से जहन्नम में दाख़िल होंगे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कौन सा अ़मल लोगों को कसरत

से जन्नत में दाख़िल करेगा ? आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह तक़्वा और अच्छा अख़्लाक़ है। और पूछा गया : क्या चीज़ लोगों को कसरत से जहन्नम में दाख़िल करेगी ? फ़रमाया : "दो चीज़ें : मुंह और शर्मगाह।" (ابنِ ماجہ،4/489،حدیث:4246)

वोह जन्नती है कौन ?

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक ने जिस को जबड़ों के दरमियान और टांगों के दरमियान वाली चीज़ों (या'नी मुंह और शर्मगाह) की बुराई से बचा लिया वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (ترمذی،4/184،حدیث:2417)

जन्नत की ज़मानत

जो अपने मुंह और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे या'नी उन का ख़िलाफ़े शरीअ़त इस्ति'माल न करे वोह जन्नती है। चुनान्चे सहाबिये रसूल, हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का कहना है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुझे अपने जबड़ों और टांगों के दरमियान वाली चीज़ों (या'नी मुंह और शर्मगाह) की ज़मानत (GUARANTEE) दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत (या'नी गारन्टी) देता हूं।" (بخاری،4/240،حدیث:6474) या'नी मुंह और शर्मगाह को शरीअ़त की मन्अ़ की हुई चीज़ों से बचाने पर जन्नत का वा'दा है।

80% गुनाह ज़बान से होते हैं

दो जबड़ों के दरमियान की चीज़ ज़बान और तालू वग़ैरा है और दो पांव के बीच की चीज़ शर्मगाह है या'नी अपनी ज़बान को झूट ग़ीबत ना जाइज़ बातें करने से बचाए, अपने मुंह को ह़राम ग़िज़ा से महफ़ूज़ रखे,

अपनी शर्मगाह को बदकारी के क़रीब न जाने दे। ज़ाहिर बात है कि ऐसा मुसल्मान मुत्तक़ी (या'नी परहेज़गार) होगा। ख़याल रहे कि तक़रीबन अस्सी (80) फ़ीसद (या'नी ज़ियादा तर) गुनाह ज़बान से होते हैं। जो अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करे तो वोह चोरी डकैती क़त्ल भी नहीं करता, इन्सान जुर्म जब ही करता है जब वोह झूट बोलने पर आमादा (या'नी तय्यार) हो जाए कि अगर पकड़ा गया तो मैं इन्कार कर दूंगा। झूट तमाम गुनाहों की जड़ है। ख़याल रहे कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की येह ज़मानत (या'नी गारन्टी) ता क़ियामत इन्सानों के लिये है और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ज़मानत ख़ुदा की ज़मानत (या'नी गारन्टी) है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/447 ब तग़य्युर)

ज़बान से तमाम आ'ज़ा की इल्तिजा

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के आ'ज़ा (या'नी बदन के ह़िस्से) झुक कर ज़बान से कहते हैं : हमारे बारे में **अल्लाह** पाक से डर ! क्यूं कि हम तुझ से मुतअ़ल्लिक़ हैं, अगर तू सीधी रहेगी, हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी होगी हम भी टेढ़े हो जाएंगे।" (ترمذی، 4/183، حدیث:2415)

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम ने **ज़बान** का सह़ीह़ इस्ति'माल किया तो इस का जो कुछ फ़ाएदा होगा वोह जिस्म के सारे आ'ज़ा (PARTS) पाएंगे और अगर येह सीधी न चली किसी को गाली वग़ैरा दे दी तो ज़बान को कोई तक्लीफ़ हो या न हो पिटाई बदन के दीगर आ'ज़ा (या'नी ह़िस्सों) की होगी। ज़बान की एह़तियात़ का ज़ेह्न बनाने के

लिये **दा'वते इस्लामी** के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये **अल्लाह** करीम तौफ़ीक़ दे तो माहे रमज़ानुल मुबारक में **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल कीजिये سُبْحٰنَ اللّٰه ! ए'तिकाफ़ की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं ! आइये ! एक "**मदनी बहार**" आप के गोशगुज़ार करूं । एक इस्लामी भाई की बयान कर्दा तफ़्सीलात के मुत़ाबिक़ वोह दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आने से पहले مَعَاذَ اللّٰه नशा किया करते थे, शराब और चरस की ऐसी लत लग चुकी थी कि नशा आवर चीजें ख़रीदने के लिये चोरी और डकैती भी शुरूअ़ कर दी थी जिस की वज्ह से उन के घर, बल्कि अ़लाक़े वाले भी परेशान थे । उन का सुधरने की मन्ज़िल की त़रफ़ सफ़र इस त़रह़ शुरूअ़ हुवा कि उन्हें रमज़ान के बरकत वाले महीने में दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नते ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल हो गई, ए'तिकाफ़ में अच्छी सोह़बत भी मिली और किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का मुत़ालआ़ भी करते रहे । कुछ अ़र्से बा'द उन्हें **दा'वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ "**फ़ैज़ाने मदीना**" में होने वाले हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत का मौक़अ़ मिला जहां इस्लामी हुल्ये में मौजूद आ़शिक़ाने रसूल की कसीर ता'दाद देख कर दिल की ह़ालत बदलने लगी । एक हफ़्ते बा'द मुक़र्ररा वक़्त पर येह फिर हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पहुंच गए और बयान सुनने लगे, बयान में कुछ ऐसा असर था कि इन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई और येह अपने गुनाहों से तौबा कर के ही घर लौटे । वोह न सिर्फ़ पांच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबन्दी करने लगे बल्कि उन के चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सज गई और उन का

लिबास भी सुन्नतों के सांचे में ढल गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم ! उन्हें **दा'वते इस्लामी** के क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र कर के नेकी की दा'वत की धूमें मचाने का मौक़अ़ भी मिला।

इन्शा अल्लाह भाई सुधर जाओगे, दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आर पार नज़र आने वाले ऊंचे ऊंचे जन्नती मकानात

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (या'नी ऊंचे ऊंचे मकानात) हैं जिन के बाहरी ह़िस्से अन्दर से और अन्दर के ह़िस्से बाहर से नज़र आते हैं। एक आ'राबी (या'नी गांव के रहने वाले साह़िब) ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये होंगे ? आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अच्छी गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए, हमेशा रोज़े रखे और रात को नमाज़ अदा करे जब लोग सोए हुए हों।" (ترمذی، 3/396، حدیث:1991)

अच्छी बात सदक़ा है

अच्छी बात करना चुप रहने से अफ़्ज़ल है और चुप रहना फ़ुज़ूल बात कहने से अफ़्ज़ल जब कि बुरी बात कहना तो बुरा ही बुरा है और अच्छी बात सदक़ा है, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अच्छी बात सदक़ा है।"

(بخاری، 2/306، حدیث:2989)

सदक़ा या'नी ?

यहां ''सदके़'' से मुराद ''सदके़ का सवाब मिलना'' है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** हर भलाई सदक़ा है। (بخاری،4/105،حدیث:6021)

शर्ह़े ह़दीस : या'नी सदक़ा सिर्फ़ माल ही से नहीं होता बल्कि हर मा'मूली (या'नी छोटी से छोटी) नेकी (भी) अगर इख़्लास से की जाए तो उस पर **सदके़ का सवाब मिलता है** ह़त्ता कि मुसल्मान भाई से मीठी और नर्म बातें करना भी सदक़ा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/95)

नेकी की दा'वत फ़ौरन दीजिये

ऐसी कोई भी फ़ाएदे मन्द बात तर्क न करे (या'नी अधूरी न छोड़े) जिस के मुतअ़ल्लिक़ जानता हो कि ह़ाज़िरीन उस के लिये दूसरी मजलिस (या'नी निशस्त) के मोह़ताज (या'नी ज़रूरत मन्द) होंगे (अल ग़रज़ फ़ौरन पूरी बात बता दे, येह न कहे कि बाक़ी आइन्दा बताऊंगा) क्यूं कि (बताने वाले का और जिस को बताना है उस के) दूसरी मजलिस तक ज़िन्दा रहने का कोई भरोसा नहीं। (इस्लाहे़ आ'माल, स. 360, الحديقة الندية،1/95)

सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब अच्छे अख़्लाक़ वाले होंगे

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** ''बेशक तुम में से मुझे सब से ज़ियादा प्यारे और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक तर वोह लोग होंगे जो तुम में से ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं। और तुम में से मुझे सब से ज़ियादा ना पसन्द और क़ियामत के दिन मुझ से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो बुरे अख़्लाक़ वाले हैं, जो ज़ियादा बातें करने वाले मुंहफट, बाछें खोल कर और मुंह भर कर बातें करने वाले हैं।'' (شعب الایمان،6/234،حدیث:7989)

"अच्छे अख़्लाक़" किसे कहते हैं ?

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَيْه इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : क्यूं कि अच्छे अख़्लाक़ वाला आदमी अक्सर नेक आ'माल ज़ियादा करता है, गुनाह उस से कम सरज़द होते हैं। दियानत दारी (या'नी ईमानदारी, अमानत दारी, सच्चाई), वा'दा पूरा करना, मुआ़मलात (या'नी लेनदेन वग़ैरा) का दुरुस्त होना सब ही ख़ुश ख़ुल्क़ी (या'नी अच्छे अख़्लाक़) में दाख़िल हैं। और बद ख़ुल्क़ (या'नी बद अख़्लाक़ लोग) अक्सर बद अ़मल होते हैं, बद ख़ुल्क़ी (या'नी बद अख़्लाक़ी) ख़ुद भी बद अ़मली है और बहुत सी बद अ़मलियों का ज़रीआ़। झूट, (अमानत में) ख़ियानत, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद मुआ़मलगी (या'नी लेनदेन में हेराफेरी वग़ैरा) सब ही बद अख़्लाक़ी की शाख़ें (Branches) हैं।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/436 मुलख़्ख़सन)

सब से ज़ियादा नुक़्सान देह चीज़

ऐ आशिक़ाने रसूल ! **ज़बान** की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है क्यूं कि सब से ज़ियादा फ़सादात व नुक़्सानात इसी से ज़ाहिर होते हैं। सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه से रिवायत है कि मैं ने एक बार दरबारे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मेरे लिये सब से ज़ियादा ख़त़रनाक व नुक़्सान देह चीज़ किसे क़रार देते हैं ? तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ी फिर फ़रमाया : "इसे।" (ترمذی،4/184،حدیث:2418)

कान शीशे की त़रह़ और फ़ुज़ूल कलाम पत्थरों की मानिन्द है

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

मैं ने शैख़ अफ़्ज़लुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को फ़रमाते सुना कि कान शीशे की त़रह़ और फ़ुज़ूल कलाम पत्थरों की त़रह़ है, जब भी इस शीशे में पत्थर फेंके जाएं तो शीशा टूट कर चूरा चूरा हो जाएगा। (المنن الكبریٰ، ص547)

ज़बान में हड्डी नहीं मगर हड्डियां तुड़वा देती है

कहा जाता है : "ज़बान में हड्डी नहीं मगर हड्डियां तुड़वा देती है, ज़बान तल्वार नहीं मगर ख़ून बहा देती है।" किसी ने कितनी ख़ूब सूरत बात कही है : "जिन बातों पर झगड़ा कर के लोग मनों मिट्टी तले जा सोते हैं उन ही बातों पर हलकी सी मिट्टी डाल कर दुन्या में पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारी जा सकती है।"

किसी को गधा या ख़िन्ज़ीर कहना

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स किसी को **गधा** (DONKEY) **या ख़िन्ज़ीर** (PIG) कह कर पुकारेगा तो क़ियामत के दिन उस (पुकारने वाले) से पूछा जाएगा : बता ! क्या मैं ने इसे गधा बनाया था ? बता ! क्या मैं ने इसे ख़िन्ज़ीर पैदा किया था ? (احیاء العلوم، 3/200, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/494)

मुसल्मान को बुरे लक़ब से पुकारना गुनाह है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मुसल्मान को बुरे नाम से पुकारना ब हुक्मे क़ुरआनी मन्अ़ है। **अल्लाह** पाक पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** आयत 11 में फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ﴾ **आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान :** "और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो।"

मा'लूम हुवा मुसल्मान का बुरा नाम रखना मन्अ़ है, मुफ़स्सिरीने किराम ने जुदा जुदा अल्फ़ाज़ में इस आयते मुबारका की वज़ाह़त फ़रमाई

है उन में से **सिरातुल जिनान** जिल्द 9 सफ़हा 431 ता 432 से दो वज़ाहतें पेशे ख़िदमत हैं : ﴾1﴿ बा'ज़ उलमा ने फ़रमाया : बुरे नाम रखने से मुराद किसी मुसल्मान को कुत्ता, या गधा, या सुवर कहना है। ﴾2﴿ बा'ज़ उलमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब (TITALES) मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को नागवार हो (लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों मम्नूअ़ नहीं, जैसे कि (मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा) ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का लक़ब अ़तीक़ और (दूसरे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का फ़ारूक़ और (तीसरे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का ज़ुन्नूरैन और (चौथे ख़लीफ़ा) ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का अबू तुराब और (सह़ाबिये रसूल) ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का सैफ़ुल्लाह था) और जो अल्क़ाब गोया कि नाम बन गए और अल्क़ाब वाले को नागवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं, जैसे (मश्हूर मुह़द्दिसीन) आ'मश (या'नी कमज़ोर नज़र वाला) और आ'रज (या'नी एक पांव से मा'ज़ूर) वग़ैरा।

(تفسیر خازن، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:11، 4/170)

फ़िरिश्ते ला'नत भेजते हैं

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस किसी ने मुसल्मान को उस के नाम के इलावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर फ़रिश्ते ला'नत करते हैं।

(جامع صغیر، ص525، حدیث8666)

शर्हे ह़दीस : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ (वफ़ात : 1031 हिजरी) बयान फ़रमाते हैं : ("उस के लिये फ़रिश्ते ला'नत करते हैं" का मत़लब येह है कि) मुसल्मान को बुरे नाम से पुकारने वाले के

लिये फ़रिश्ते नेक लोगों के मक़ामो मर्तबे से महरूमी की दुआ़ करते हैं। जब कि नाम के इ़लावा किसी और लफ़्ज़ से पुकारने से मुराद येह हो सकती है कि ऐसे नाम (या लक़ब) से पुकारना जो उसे बुरा लगे हां अगर ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारा जो बुरे न लगते हों तो ह़रज नहीं, जैसे "किसी को उस के अस्ल नाम के बजाए ऐ अ़ब्दुल्लाह !" (ऐ भाई !) वग़ैरा कह कर पुकारना। (فیض القدیر، 6/163، تحت الحدیث:8666 ملخصاً)

बच्चों से भी सच बोलिये

सहाबिये नबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (अपने बचपन शरीफ़ का वाक़िआ़ बयान करते हुए) फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन हमारे घर तशरीफ़ फ़रमा थे कि मेरी अम्मीजान ने मुझे अपने पास बुलाते हुए कहा कि "इधर आओ मैं तुम्हें कुछ दूंगी।" रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मेरी अम्मीजान से) पूछा : "तुम ने उसे क्या देने का इरादा किया है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं उसे खजूर दूंगी।" आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तुम उसे कुछ न देतीं तो तुम्हारा एक **झूट** लिख दिया जाता।" (ابوداؤد، 4/387، حدیث:4991)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर का ज़िक्रे ख़ैर

आइये ! येह रिवायत बयान करने वाले सहाबिये नबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मुबारक ह़ालात सुनते हैं, आप का नाम मुबारक : अ़ब्दुल्लाह इब्ने आ़मिर इब्ने कुरैज़, आप कुरैशी हैं, मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मामूंज़ाद भाई हैं। विलादत (या'नी BIRTH) के बा'द इन्हें सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया गया, आप ने इन पर दम किया।

हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में बसरे और ख़ुरासान के गवर्नर रहे, हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने आप को इस ओ़हदे पर क़ाइम रखा, नहरे बसरा आप ने ही खुदवाई, बड़े सख़ी थे। 57 या 58 हिजरी में वफ़ात पाई। (الاصابہ لابن حجر،5/14تا15)

माल व मकान दोनों रखो (वाक़िआ़)

सहा़बिये नबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ख़ालिद बिन उ़क़्बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से उन का बाज़ार वाला मकान 70 या 80 हज़ार दिरहम में ख़रीदा। रात हुई तो ह़ज़रते ख़ालिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के घर वालों के रोने की आवाज़ सुनी, तो अपने घर वालों से पूछा : येह क्यूं रो रहे हैं ? उन्हों ने कहा : मकान के फ़रोख़्त (या'नी SALE) हो जाने की वज्ह से। तो (आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का दरियाए सख़ावत जोश में आया और) अपने ग़ुलाम से फ़रमाया : ऐ ग़ुलाम ! ह़ज़रते ख़ालिद बिन उ़क़्बा के पास जा कर कहो : तुम मकान भी और उस की जो रक़म तै हुई वोह भी अपने पास रख लो। (شعب الایمان،7/438، قول نمبر10887)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّیْن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मां बाप के ना फ़रमान की इस्लाह़ कैसे हुई ?

सहा़बा व अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत बढ़ाने, मुसल्मानों के नाम बिगाड़ने से बचने का ज़ेहन बनाने और बच्चों के साथ भी हमेशा सच बोलने की आ़दत अपनाने का जज़्बा पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये। **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल की

बरकत से एक मां बाप के ना फ़रमान नौ जवान की इस्लाह़ हो जाने की एक "**मदनी बहार**" सुनिये और झूमिये : एक नौ जवान पहले पहल बे नमाज़ी और मां बाप के ना फ़रमान थे, यूं येह **अल्लाह** पाक का भी और बन्दों का भी ह़क़ ज़ाएअ़ कर रहे थे। एक मरतबा इन के वालिद साहि़ब की दुकान पर एक रिश्तेदार मुलाक़ात के लिये आए जो **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से तअ़ल्लुक़ रखते थे। उस वक़्त येह भी वहां मौजूद थे, उन इस्लामी भाई ने **दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की जो इन्हों ने क़बूल कर ली और जुमे'रात को इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए। इन्हें इज्तिमाअ़ में कुछ ऐसा रूह़ानी सुकून नसीब हुवा कि फिर बा क़ाइदा हर जुमे'रात को इज्तिमाअ़ में शिर्कत करना इन का मा'मूल बन गया। इतना ही नहीं, रिश्तेदार इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश की बदौलत इन्हों ने सुन्नतें सीखने सिखाने के तीन दिन के **क़ाफ़िले** में भी सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल ने इन्हें **तरबियती कोर्स** करने का ज़ेह्न दिया। जब येह क़ाफ़िले से घर लौटे तो मां बाप की ना फ़रमानियों पर शरमिन्दा थे, इन्हों ने मां बाप के क़दमों में बैठ कर रोते हुए उन से मुआ़फ़ी मांगी, उन्हों ने भी शफ़्क़त करते हुए इन्हें मुआ़फ़ कर दिया। इस के बा'द इन्हों ने मां बाप से अ़र्ज़ की : ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है, न जाने कब ख़त्म हो जाए ! मैं जीते जी इ़ल्मे दीन सीखना चाहता हूं, इस त़रह़ की गुफ़्तगू कर के इन्हों ने तरबियती कोर्स के लिये मां बाप को राज़ी कर लिया और इजाज़त मिलने पर ख़ुशी ख़ुशी अपना सामान उठा कर तरबियती कोर्स में शरीक हो गए जहां इन्हें बहुत कुछ

सीखने को मिला। इन की ज़िन्दगी का अन्दाज़ कुछ ऐसा बदला कि जो पहले वालिदैन की ना फ़रमानी करते थे, अब घर से निकलने से पहले उन के क़दम चूमते। फिर इन्हों ने **फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स** भी किया, बढ़ते बढ़ते इन्हें **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी भी मिली। **अल्लाह** पाक इन्हें और हमें **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बच्चों को झूटा बहलावा देना

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : गुफ़्तगू (आ'माल नामे में) लिखी जाती है ह़त्ता कि एक शख़्स अपने बेटे को चुप कराने के लिये कहता है : मैं तुम्हारे लिये फ़ुलां फ़ुलां चीज़ें ख़रीदूंगा (ह़ालां कि ख़रीदने की निय्यत नहीं होती) तो उसे **झूटा** लिखा जाता है।

(احیاء العلوم،3/142, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/350)

बच्चों को फुस्लाने के लिये मोह़तात़ त़रीक़ा इख़्तियार कीजिये

अफ़्सोस ! आज कल बच्चों को बहलाने के लिये ब कसरत **झूट** बोले जाते हैं, मसलन निय्यत न होने के बावुजूद कहा जाता है : तुम्हें खिलौने, झूला, टॉफ़ियां, फ़ुलां बिस्किट ला कर देंगे, फ़ुलां डिश पका कर खिलाएंगे, फ़ुलां जगह सैर कराने (या'नी घुमाने फिराने) ले जाएंगे वग़ैरा वग़ैरा। हमारा सच्चा **अल्लाह** अपने सच्चे ह़बीब के तुफ़ैल हमें हमेशा सच बोलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अगले हफ़्ते का रिसाला

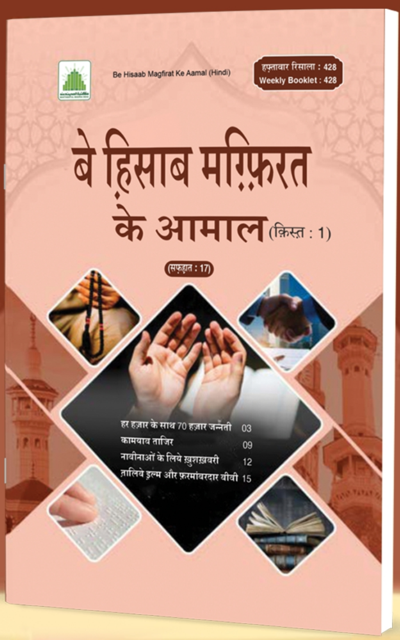

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel — Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025